

# विद्यापति पुरस्कारक घोषणास' किछु घर कानन, किछु घर गीत

भाषाके अप्पन खास लोक आ लोकसांस्कृतिक सत्ता होइत छै आ भाषा-संस्कृतिके संरक्षण संवर्द्धनमे सरकारी सहयोगक अमूल्य योगदान रहल भावनाके नेपाल सरकार गम्भीरतास' अवगाहि एक करोड़क नेपाल विद्यापति मैथिली भाषा-साहित्य पुरस्कारक व्यवस्था कएने अछि । नेपालक अन्तरिम संविधान कालमे संघीय संरचनाक मुख्य आधार भाषिकता, जातीयता, सांस्कृतिकता क्षेत्रीयता आ पौराणिक-ऐतिहासिकता मानने होइतहुमे, नव नेपालक संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक संविधान निर्माणमे लागल विघटित संविधानसभा अपन कार्यकालक उतरार्द्धमे आवि एकरा पहचान आ सामर्थ्यके आधार मानि संघीय संरचना

विकासमे लागल छल । जमिनी यथार्थक सम्पूर्णता आ सषा-संस्कृतिस' उत्पन्न पहचान दुनू अर्थे मातृभाषा राजनीतिक केन्द्रमे रहल अछि । क्षेत्रीय मुद्दा भाषिक राजनीति नेपालमे आन्दोलनी रूप ग्रहणक' बहु, विवाद आ संवैधानिक सुनिश्चितताके विषय बनल रहल । समग्र मधेश एक प्रदेश आ सम्पर्क भाषा हिन्दीक बलधिडरो राजनीतिक धौसस' मैथिलीके सवस्वाहा करैत एकरा सहित अवधी भोजपुरी आ थारुभाषापर हिन्दीक उपनिवेश कायम करवाक जे विदेशी भाषिक उपनिवेशवादके जे चक्रचालि चलि रहल छल ओहि विकट कालमे नेपाल सरकार मोटगर रकमके ठोसगर नेपाल विद्यापति मैथिली भाषा-संस्कृति पुरस्कारस' मैथिलीक



अस्तित्वबोध आ स्वायतताक संघर्षके विशेष स्वीकृति प्रदानक' एकरा नेहाल क' देने अछि । विद्यापति पुरस्कारस' मैथिली रचनाधर्मिता आ सृजनशीलता गतिशील आ ऊर्जावान बनओ ताहि बातक उत्प्रेरणा एहिमे निछुन भ' अन्तर्निहित छै आ एहि अखाढ़ी

नवरात्राके शुभारम्भ दिनमे विद्यापति पुरस्कार कोषद्वारा पांचगोट मैथिली सप्ताके सम्मान स्वरूप विभिन्न पुरस्कारस' पुरस्कृत कएल गेल अछि । मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकार डा. विमलके नेपाल विद्यापति मैथिली भाषा-साहित्यकार पुरस्कार, मिथिलाक शहीद रंजु माके मैथिली कला-संस्कृति पुरस्कार, डा. रामावतार यादवके नेपाल विद्यापति मैथिली अनुस्न्धान पुरस्कार, प्रा.परमेश्वर कापड़िके मैथिली बालनाटक चौआरिक पाण्डुलिपिपर नेपाल विद्यापति मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार आ डा. रामदयाल राके शके नेपाल विद्यापति अनुवाद पुरस्कार प्रदानक घोषणा कएल गेल अछि । पुरस्कार कोषक गठन बाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

## सलहेसक जन्मस्थल कमलदहके हाल बेहाल

भागवत भावक दिव्य देवभूमि रहल अछि-फुलवाडि । मानिक दह आ एतुका जंगलमे देव मेला लगने ई देव पीठ रहल बातक जनाश्रुति अछि । सिरहा जिलाक गोविन्दपुर फुलवाडिया गामके उत्तरमे रहल मानिक दह देवस्थल देव-मुनिक मन्त्रणा स्थल छल । मन्त्रणा स्थलो केहन त' देव-गर्भस्थल/पीठ सनके छल, जत'स' नव सृष्टि आ संरचनाक उद्यम होइत छल । ई कोन कालखण्डमे ई अस्तित्वमे आएल से पुराणादिमे उल्लेख्य



नहि बुझाइछ आ ने प्रकाशमे आएल अछि मुदा किछुए वरख पहिनेधरि एहि देवगनाह खह आ फुलवाडिया जंगलमे रातिखनक'

सलहेस स्थानसबमे बनाओल गेल नान्हटा मन्दिर, गहवरबस सलहेसक विराटता आ गाथाक महनीयताके हिसावे आव छोट आ भुच्च लगैत अछि । काट-छाँटिक उसराडीह बनाओल गेल गढ़, ढाहि-ढनमाक' भथारहल दह आ पोखरि आ छाँटि-चपिक' उजार बनौने जा रहल वनके पुनरुद्धार सहित संरक्षण-संवर्द्धन आ धार्मिक आकर्षणक केन्द्र बनाए एकरा जगजियार, लहरदार बनाएब स्थानीय प्रशासन, जिला विकास, मालपोत कार्यालय आ पर्यटन विभागके अनिवार्य दायित्व बनैछै ।

महा-महा प्रकाश-ज्वाला विचित्र रूपमे एत' अवैत छलै, से देखने सुनने लोक एखनो एहि परोपटामे जिवते अछि । कमल दहमे देवोत्थान पावनि दिन एखनो ठुठिया मेला लगैत अछि, जेवात देव आ पुराणस' सम्बद्ध बात लगैत अछि ।

फुलवाडिमे अपूर्व अलौकिक गमराम-महमह फुल सबहक महा जंगल छल । जंगलमे देवलोक, ईन्द्रलोकस' परी, अप्सरासब फूल लोढ़, खेल-बाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

## मैथिली मातृभाषामे प्राथमिक शिक्षाके लेल शिक्षक तालिम



बहुभाषिक शिक्षाकार्यकम ओना नेपालमे विधिवत लागू भ गेल अछि आ बहुभाषिक शिक्षा शिक्षक तालिम अन्तर्गत मैथिली मातृभाषाके लेल सलहीस' ल'क' पुरुवमे भापा मोरङ जिल्लासबमे शिक्षकके तालिम द' दक्ष बनाओल जा रहल अछि । जिल्ला शिक्षा कार्यालय, धनुषा इएह दस' १७ गते धरिमे एकसय

शिक्षकके मैथिली मातृभाषाके तालिम सेहो द रहल अछि । जि.वि.स. धनुषाक अपने तालिम केन्द्रमे संचालित तालिममे बहुत विषयके संगे आधारभूत तहक शिक्षामे मातृभाषाक महत्व, बालमैतृ शिक्षाक विविध पक्षसभक चर्चा, भाषिक समस्या एवं शैषिक प्रक्रिया, समुदायस' जुड़ल

गीतनाद, फकडा, बुझौअलि पावनि तिहार, बालखेल, कथा गीत, व्यवहारक सूचीकरण तथा शिक्षाणक विषय साम्वन्ध, बहुभाषी शिक्षण नमूना पाठ्यक्रम एवं मातृभाषाक स्थान, समूहगत स्थलगत भ्रमण, भ्रमणक अनुभवस' प्राप्त विषय वस्तुक प्रस्तुतीकरण, मातृभाषाक माध्यमस' विषयगत शिक्षण योजना तैयारी रहल अछि । बाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

## समाजिक गौरव आ सांस्कृतिक पहचानक प्रतिक सलहेस गाथा

मैथिलीक बड़े-गाथा आ गाथापुरुख सबके स्थान आ प्रतिष्ठा सडिरहा बेतरे बेबाइल भ' रहल अवस्थामे, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आ वी.पी.कोइराला नेपाल-भारत प्रतिष्ठानक आयोजनामे आखाढ़ ४,५ गतेके लहानमे लोकनायक सलहेस विषयक संगोष्ठीमे आमजनस' अधिक विज्ञ, विशेषज्ञ आ विद्वानलोकनिक उपस्थितिमे सुसम्पन्न भेल अछि । सम्पादित काजे-वाते, बहुत अर्थे ई संगोष्ठी उल्लेख्य आ उपलब्धिमूलक रहल अछि । गोष्ठी संयोजकप्राज्ञ रामभरोस कापड़ि भ्रमरक अध्यक्षतामे सम्पन्न एहि दू दिवसीय कार्यक्रममे प्रज्ञाप्रतिष्ठानक आंगन पत्रिकामे छपल आठगोट आलेखके कार्यपत्र मानि प्रस्तुत कएल गेल छल जकरा पाठ करवाक पलखैतक अभावे रहल ।

लहानमे सम्पन्न ओहि संगोष्ठीके सफल आ महत्वपूर्ण एहि दुआरे मानल गेलै जे सलहेस विषयपर एहि तरहें जुटिक', जाँघ जोड़ि डटिक' दस्तावेजीकरणक काज एहन नहिए प्राय भेल छलै । सलहेसक गाथा विस्तार, ओकर आसि-आस्थाक प्रसार, मैथिली भाषा-संस्कृतिक पहचान आ गौरव प्रदान कर'बला भावभूमिके



कालकमे हास आ विनाश भ' रहल छै । एकर गुण-गौरवक प्रचार-प्रसार, संरक्षण-संवर्द्धन राष्ट्रिय अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर करैत, आधुनिक

संचारस' एकरा खूब नीकजकाँ जोड़ैत, एकरा नवका पीढ़ीक जन-जनमे प्रवाहित करा सकबाक सम्पूर्ण सम्भावना आ व्यवहारिक उपायसबके दर्शाय, लहान घोषणपत्र जे प्रकाशमे आएल अछि, ओ विशिष्ट आ कार्यमूलक अछि ।

गोष्ठीक अगैके रूपमे, सहभागीलोकनि द्वारा सलहेस स्थान महिसौथा, फुलवाडि, कमल दह, माणिक दह आदि सबके स्थालगत सांस्कृतिक-पुरातात्विक अध्ययन भ्रमण आ ओकरे आधारपर वहस, छलफल आ चर्चा-परिचर्चास' लोककन्ठमे छिड़िआएल भुतलाएल रहल सलहेस गाथाके पाठ संकलन, स्थान आ पात्रसबके इतिहास निरूपण, तथा प्रमाणिकरणक दस्तावेजी आधार प्रस्तुत कएल गेल । कार्यक्रममे, वहस आ छलफल द्वारा उठाएल गेलप्रश्न, जिज्ञासा, कार्य-योजना आ सन्दर्भसबके ध्यानमे राखि लगले किछुए कहिनाक वाद एहिपर अन्यान्य गोष्ठी, सेमिनार आ उत्खनन आ दस्तावेजीक नियार कएल गेल ।

नेपाल विद्यापति पुरस्कार कोषक सदस्य सचिव श्याम शशिक बाँकी अन्तिम पृष्ठ पर



प्रकाशक : **कुमार भास्कर**  
सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापडि**  
सहसम्पादक **कैलास दास**  
कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक  
फोन नं.: ०४१-५२४९५२  
मो.नं. : ९८४४०२२५९४,  
: ९८४४०५३९७३  
: ९८४४१००१६४  
ईमेल : **dhuadhaja@yahoo.com**  
मुद्रक: **त्रिदेव अफसेट प्रेस**  
जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



## सम्पादकीय

## सलहेसक लोक जीवन-दर्शन आ सामाजिक प्रतिबद्धता

सलहेसगाथामे सम्पूर्ण लोकजीवन दर्शन आ सामाजिक-सांस्कृतिक संवेग, लोक-स्वर आ सगीत परिपुष्ट अछि। लोक आस्था, जनविश्वास, अनुष्ठान आ जीवन पद्यतिक सम्पूर्ण रीति-नीति एहिमे भेटैछ। मिथिला आ मैथिलीक अमूल्य साहित्यिक निधि तथा विशिष्ट सांस्कृतिक सम्पदा सम्पन्न लोक महानायक सतवरता सलहेसक अतुलनीय अपूर्व मानवीय गुण, शौर्य-वीर्य, आ पौरुखक संगहि तन्त्र-मन्त्र शक्ति आ दैवी कृपा प्राप्त छलनि। नररूपिया लीला पुरुखक अवतार आ कथा विस्तार राम-कृष्ण जकाँ जनमानसमे लीलामय अछि। जनकल्याण, लोकसेवा अभियान, दिव्य प्रेम, आ दुखीया उपेक्षित आर्तजनके सोफे गोहारि सूनि फरियाद कएनिहार सलहेसक चरित्रगाथा अपूर्व, दिव्य-देवतुल्य, आ अलौकिक बना देने अछि। राजा सलहेसके देवत्व प्राप्त रहनि आ एकर उपयोग ई सब अर्थ जनसेवामे लगा देलाक कारणे हिनक आसि आ श्रद्धाभावके चलते ई लोकमानसपर राज कएनिहार छथि तथा गृहदेवता, ग्रामदेवताके रुपमे हिनक पूजा-अर्चा होइत छनि।

नेपाल एखन नव निर्माण आ संघीयता विकासक क्रममे अछि आ राजनीतिक हल्लुकपन आ राजनेता लोकनिक मूल्यहीन अप्रतिबद्ध क्रियाकलापके देखि लोक घोर निराशामे रहल अछि सएह नइ, बहुत अशमे एखन राजनीतिपरपरस’ विश्वास उठि गेने मानि रहल अछि जे देशमे एखन शुच्चा नेता एकौटा छथिए नइ। एहनमे सलहेसक सम्पूर्ण जीवन चरित्र आ लोक अभियानी प्रतिबद्धतास बहुत किछु सिखि, देशक कल्याण नीकस’ क’ सकैत अछि। दोसरमे लोक आ अपन धरती प्रति कएल गेल सुकर्मके निष्ठापूर्वक स्वीकारि ओकर अप्पन भाषा एवं संस्कृति मैथिलीके पहचान सहितक स्वीकृतिक आधारपर संवैधानिक सुनिश्चितता दिआबहिके चाही। लोक आस्थावस बजैत अछि सएह नइ, सत्यो छै जे जननायक सतवरता सलहेसक लोकदर्शन आ राजैतिक चेतना एखनुक भड्ठल-विगड़ल देशकालक विकठ परिस्थितिमेऊर्जा, उत्साह प्रदान क’ सकैछ। राजनैतक अवमूल्यनक एहि अवस्थाक कारक तत्व ईहो अछि जे नेतासबके मोफा सुपुक्क साफ आदर्श चरित्र नइ छै आ सलहेस, लोरीक दिनाभद्रीसनके जनायकके आदर्शकना आगू बढ़ल रहितए त एहन हानि-गराइन आ बेलल अवस्थामे नहि रहितए।

सलहेसक चरित्र समाजिक-सांस्कृतिक तपस’ सिद्धि प्राप्त कएने अछि। एहनमे समाजिक सदभाव, सांस्कृति चेतना, लोकप्रतिबद्धता, राजनैतिक चेतना आ शुद्धि-निष्ठा प्रतिक आग्रह महान व्यक्ति, चरित्र आ गाथापुरुख सबस’ ग्रहणक’ नेपालक सबटा राजनैतक वाधा-विरोध उठलु-उपरफाँटु छिच्छा-चलेबास’ त्राण पावि, देशके संवधानिक सुनिश्चितता, शान्ति-सुव्यवस्थाक प्रत्याभूति दिआक’ देशके विकास आ निकाश करा सकैत अछि। जनमत एखनुक सबस’ बढ्का तागत अछि आ जनाधार घटने राजनेतासब चारुनाल चित्त भ’ कतौके नइ रहि जाइछ। तएँ सलहेसोके मननक’ सार्वभौम जनताके पक्ष आ सेवामे लागि अपन आगबैत सम्हारैथ, सुधारैथ, से आजुक राजनैतक-सामाजिक मांग अछि।

त्यंग्य:-

# सिंहासनपर आसन

ना' त' ओना हिनकर ना छनि वृजकुमार मुदा गामघरके लोक विरीजकुमार कहै छनि। हिनकर चलल-बनल समय छै, से, कमाक' जे ई बूर्ज भ' गेल छथि तैं हिनका आव लोक कहैछनि-बुर्जकुमार ! ऐ सम्बोधनस' अशीर्वादी प्रशान्ता व्यक्त करैत छथि- धन्यवाद, ऐ सम्बोधनके लेल।

सेकी कहू ! बाप रे बा ! दैव रे दैव ! ओइ दिन, विरीज कुमारके दुरा-दरबज्जापर गोलिया-चौपैत लकड़ीके, ढेंडपर ढेंडके अम्बार लागल रहै। गन्ठ-मुन्ठ जे लकड़ीसब गीरल रहै, से रस्तो-पैराके अवरजात बन्न भ' गेल रहै। महज हटा लिअ', कहके केकरो सामर्थ नै रहै- किनकर मैया बाधिन जनिहे जे सोभे डिठे बिजकुमारके मुँहि भिंक दिहें!

वतोवरण उत्सवी रहै। अनमन अनमन पुरहितिया उपनायनक मरब-ठठीसनके। विरीज कुमारस' बेसी हुनक चम्चासबके खुसीस', धरतीपर पएरे नै टिकै।

मुइल बात कह'मे भुइल भ' गेल। नयाँ पमरियाके गारिपाछु ढोलकी सनके बात रहै- विरीज कुमारके। हालहिमे ई कथा लिख' लागल जे छलैथ। ओइ कथाके छपिते मातर, कापडि सँरके चढ़एलापर, हिनकर गारि सिक्कापर चढ़ि गेल रहै।

कथा छपिते मौरतर, ओकर सोहरा एतेक ने भ' गेल रहै, जे मैथिलीक उ नामी-गरामी कथाकार सबके बाइ पिपरक पात जिका, कँपबाके त' कँपवे करै, सबके अदक सन्हिया गेल रहै जे आव ई बन्टा-पट्टा सबके सिंहासन छिन लेतौ। तैस' बँचके उसब एककटा उपाय कएने रहै। भल भाइ रे, ओकरा केउ कथा, साहित्यक गोष्ठीके बजैवे नइ करै जाइजो। आ जँ कहू चोरगल्ली, दोगल्लीसब द'क', विनु कहले बेकहल चलियो जाइहौ, त' ओकरा बैठ'के ठामे नै दे। डागडर रेवती रमणके ऐ बातस' उदेवेगी सहमति रहै।

बिजकुमारो खेल्ल-खेलार लोक। देह-दशास' मोटगर छै, तेहन कोनो बात नै, बढियोस' तेहने धुसगर खनहन लोक। ओहो ओकरा सबके बातके तरबा तरमे कर'लेल, आइ धरि जे जतेक नम्हरका लकजरी-चेयर बनल रहै, तहूसबस' कने मोटगर दमगर उच्चका, सिंहासनी-खुरसी अपनेस' बनबा'क', राखि लेब'लेल, ई खुरसी बनबा रहल रहए। से कथीला त' आव जँ जे कोनो मैथिली कथा, साहित्यिक गोष्ठीसब होएतै आ कहू हिनका ओइमे जे नै बजएतनि त', बल पेलिए ओतए जएता। जएता विनु बजाएले, बलघौसीए जे जाएता, त', पोहने लागल अपन खुरसीयो गुड़कएने जएताह। आ जा' क' अपन ओइ गोष्ठीमे सबस' उच्चका खुरसीपर थभकि जाइ तकरे जोगार भजारमे ई खुरसी बनल रहै।

भ्रष्टाचारी, दूनम्बरी कोरोवारबला सबके आइ-काल्हि कमी नै आ सबके हिनका डरे बाइ कपै। से उ सब जखैते सुनलकै जे वृजकुमार यादवके एगो खुरसीके कमी है, कि लेटेस्ट मोडेके बेस्ट फर्निचर सेटे पठा-पठा दैक। आ सेकहूँ एक दुगोटे ? कतेक नै कते गोटे पठा देने रहैसे धर' उसार'के कतौ जगहे नै रहै। ई फर्निचर उपहार हिनका परलय पहाड़ भ' गेलनि। विनु अगुआर-पछुआरके बौक्सनुमा सकोली अपन घर रहैन। रेडियो टुडेमे जे पैस'मे चोरगल्ली रहै सेहो महाघकोली! जनकपुर टुडेके साइबरीया टेबुलबला कारजालयमे इश्वरे लक्ष्मणस' नकसिक भ' जाइक। आ ई कैसमनी त' रहै नै जे लौकडमे ध'क' निश्चित भ' जइतथि आ नै ई कम्प्यूटरके फाइलमे सेभक' राख'बला मेटर रहै।

नमढोंडहा ढनढोलबा गिरीया लग रहवाल वृजकुमार, मरबड़िया फिड़रिया उपहार दातासबके मेल-एड्रेसपर एसएमएस क' देलखिन्ह- अपनेसब जे हमरा फर्निचर पठाक' फूस-खुस कर' चाहलीग', तैला तौले-घैले, ढकने-सरबे धैनवाद ! आ जँ कि अहाँसब पठा देली आ ओकरा स्वीकार नै करु, से हमरा कुम्हारौरिया भल-मनसाहत नै लागल। ताहि ल'क' एकर मिसयूज नै होइक तै, दुआरे हम एकरा रिफ्यूजो नइ कइली, तैं की ? एकर लागतआ आगत-अर्थके अर्थ दैत,अर्थात् काठमाण्डूके मल्टीमार्केटमे पठा देलिऐ आ एहिस' जे अर्थ कलेम्ट क' ग्वाम्मै जे आएल से बहुत अर्थे अर्थपूर्ण रहल, ताहि अर्थे अर्थात् धैनवाद !

—बीबीसीकेलेल जनकपुरस' वृजकुमार यादव !  
फोन्टक गड़बड़ीस' उ एसएमएस एना पढ़ाइक- बुर्ज कुम्हार या देव ! !

वृजकुमारक कथा रचानी आ खुरसी बनानीस' खौलल रामभरोस प्राज्ञके बड़े परपराइक। **नहि आव नै ! बन्न कोठरीक औनाइत धूँआ भेल तोरासडे** - (उढ़ैरक') **जएबौ रे कुजबा** बला रामभरोसके

पित्ते कोनो आरधार नै रहैक। एकछाड़ि कएटा सरसतीके विनु विआहल बौह बनब' बला ई मरदा **महिषासुर मुर्दावाद** रागमे फरक' लगलै। फड़क'स' बेसी फड़ड़ाइक- ई सब परमेश्वराके खचरैस' एना भेल्ले। उ नै अनेरेके फुसना पद-बराइ करितै आ नै वृजकुमारबा एहन अलगटेंटा किरदानी करितै।

मौन, चन्द्रेशके पटियाक' अपनेटाके गुणखुराह इतिहास लिखबाब'बला, ई अप्राज्ञ-पुरुखस', ऐ बातकेलेल खाली पर-मुख डा. पौशपैते नै, डाकडर खेवती रामण,अजोधा नाथसबके अण्डा सटैकक' गण्डा भ' गेल रहै। से उसब पोसड़ाइयक लहजामे, टुसकारी टोन द'क' टभकला- हमहूँ त' सेहे कहै छलीऐ, ओकरा छोड़ि आनके चढ़ा-बढ़ा सकैए ?

पित जखैन जे छाँति भेल्लै त' थोड़ेक लौत होइत रेवतीजीके कोंकौरैत बजला- यौ, ऐ ठाम बैठल, मुँह की तकैछी ! अहूसब जा क' हुनका समझएवै, से नइ होइए ?

तै घड़ी ओ रावण कौरवक पाटमे नै बूझाथि। घरेमे घमासान, महाभारत करैत काल ओ एहन पाटमे बूझाइत रहैत छथि।

नरक्षराक', ओतस' घसक' के ई बढियाँ उपाय है, हुनकासबके लेल।

प्राज्ञजी लगस' लोहछले, ओसब टेवा-टेवी टघरला', से वृजकुमार लग जाइते स्वर बदलि लेला, डा.रेवतीरमण लालजी- देखल जाय, सिनीयर जुनियरके ख्याल अपनेसब नै रखबै त' बात ठीक नै भेलै। यौ हम त' प्रमाण देव जे हम त' डा. धीरेन्द्रोस' जेठ छी !

—छी त' छी ! वृजकुमारजी गहदियाक' टारि देलकैन- अहाँ धीरेन्द्रेस' बपजेठ बनैछी त' छी। ऐमे हमर कोनो दालि नै गलैय से हम अमिल पिउग' !

सिहर'ला' सिहरै, महज बातके अओर, दकोरिक' सिलियबै- तबत ' ई खुरशी हमरा भेटओ !

करिया लालके निकैलते, सपनौरिया सुटकानमारि,अगध अजोधानाथ चौधरी वृजकुमारके देहरीपर पैर दैते, ओइ खुरसीके चमक-छाँही देखिते चकविदोर लागि गेलनि। पंचतन्त्रके व्यास जकाँ ऐस' जे लौल लागि गेलनि आ तै बातके अटकारि-भजारि, पनियाब' लाथे दिव्य-वाक् फोलनि- वृजकुमारजी ! जष्ट,हमर एकटा सल्लाहटा मात्र। हमर कहब जे...

उड़लो कौआके चालि पहचानबला, लक्का-उचक्का पहिनहि अपनेसनके जबाब देलथिन- कहून', कहू। ओना हमर आइतैकके ई चलेबा रहल हय जे हम केकरो सल्लाह नै मानी। से उन्टे ढौए द'क' किएने देथि। आ जँ हम मानली त' फेर वृजकुमार कथीके ?

— सएह कहल ! ओना अपनेके लड़का पढ़ैए, बोर्डिङ स्कू-ऊ-ल मे। फीश-तीश नहिए तिरैत होएवे , से जष्ट हमर एकठा अनुमान है।

— सोफरफी बाजू न' जे हमरास' अहाँके की अपेक्षा हब' ?

— नै सेहे कहल। एहनमे, आइ-काल्हिके पढ़ल लोक बाबू-मायके तेहन कहाँ मानै छै ? अजमाक' अन्तिम गोटी कन्टाही लहजामे ओ भजलथि- कोन हर्ज जे अहाँ अपन अगिला गति-मुक्तिकलेल ई खुरसी हमरे उछरडि दितौ त' कतेक बढियाँ रहितै , नै ?

कनडेरिए गुम्हरान गुम्हरलकै वृजकुमार। ई गुम्हरैनी हुनका दूलती लथारस' बेसी भारी पड़लनि, तैयो अपन थुथुरलोजी नै छोड़लथि- नै नै, अपने ई हमरा दिअ' नै दिअ ! धरि, हमरा नामे एकरा धोषणाटा जे करा दितिए त' आवला सात पीढ़ी के नरकक बाट बन्न भ' जइतए।

आन रहितइ त' जिते घोंटि लितै बन्टावीर ! महज जाओ रे लोभ-लालचके तृष्णा। मन मसोरिक' साइद ऐ दुआरे रहि गेलै जे- कहूँ अगिला विद्यापति पुरस्कार ई खुरसीक रचनाधर्मितापर भेटि जाय !

अखुनका बातके सेप-घोंट कन्ठतर गेलो नै रहै कि रबरल पेड़िए, टेढ़िए चालिए, धमाकद' धकलाह रमेश रंजनजी।

मन-मितबा रहै तैं तैं की ? आगत-भागतस' स्वागतके छुच्छ फुहारके, आइतैकक के इतिहास नै रहल बातके उमेद आइ ओ किए करितथि, से धुस्सद' धसि गेला सोफापर आ लगला बातके गलठैत पेघराब- मितबा, सुनै छियो जे कहाँदन कोनदन बिखपाद पदला ग'!

— नै नै, नव नेपालके निर्माणके समयमे, हम तोरा पूछै छियो जे हम खुरसीए बनबएली त' तोरासबके ऐ रचनात्मक बातके हरख मानिक' हमरा नामके भालि बजब' चाही ने ?

बाँकी ३ पृष्ठ पर

ओ जे कएलनि

E-mail

dhuadhaja@yahoo.com

अहाँ नै कहबै त' लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक' गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त' बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलघौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक' टोक' आ सैर-साबतु कर'के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ'क' E-mail करु !

सलहेस हमरासबके जान-प्राणस' बढिक' अइ आ सुनलिऐअ जे लहानमे ऐपर कार्यक्रम भेल छलै। एकर नीकस' संरक्षण संवर्द्धन होइक। हमसब त' सेहे कहब।

रामस्वरुप पासवान. सिरहा

— देतासबके आइसे नइ रहलै। नै त' एकर जग' जमीनसबके अपनामे दराक' दरमेस'बलाके ठाढ़ै टिड क' दितै।

—पवितरी धौनकाइन, गमहरिया

धू तै दिनके बात किछु आउर रहै। पहिने ओतेक सलहेस नाच कत' देख' पाइ ? हमरासबके बाबा बाउ पालीमे महसारइए खूक हौइक। एहन एहन महरैयासब रहै जे गाम गमैतमे, विआह दानमे समर बान्हिक' जाइक। देखै छहो जे आव त सिलेमा टिवी सलहेस नाचोके चाटि पोछि लेलकै।

बेचुआ मडर. गोलबजार

—लोकसब धियानै नै दैहै नइ त' मनपर्दी एना कहू गढ' देवस्थल सुनके लोक काटि-छाँटिक' अपनामे दरा पचा लितै ? सलहेस पूजा त आव हमरे जातिसबके एकाबि भ गेलो।

रमवरणा पासमान, फुलबड़िया

मेल

# मालिन सतिक प्रेम अभियानक गौरवगाथा

राजा हिमपति मालि छलै मोरंग के राजा । स्त्री नाम छलै-दुखबी मालिन । ओकरा कोखि से साँचगो बेटी जनम लेने छलै । रेशमा, कुसुमा दौना मलिनिया, रानी तरेगना सबसँ जेठ रानी फूलवंती । जइ दिन जनम लेलकै । सोइरी घरमे आँचर बान्हि देलकै । जे वर हमरा होइहह त’ श्री सतबरता देवता । बौआ मोतीराम बौआ बुधेश्वर बहिन बनसप्टि हमरा दिह । ई व्रत ठानि लेलकै मलिनियाँ सब ।

हौ मइया दुर्गा के पूजा करै छै

राज त’ मोरंगमे

मइया दुर्गा के पूजा करै छै

सब त’ मलीनियाँ बहिन गय ।

से मइया गे मइया

पाँचो बहिन आँचर बन्हने छै । छह दिन छठिहारमे । एतेक सुन्दरता लइकी छेलै जे हँसै छेलै त’ जेना देह से हीरा गिरै छेलै । कनै छलै त’ आँखि सँ जेना मोती फहरय । हिनपति सोचलक जे हे भगवान जखन एहेन लइकी हमरा जनम लेलक । भागशाली । त’ एकरा अग्निकुण्ड बनाक’ ओहिमे द’ दियौ जे भक्ति करतै ।

से अग्नि के कुण्डमे हौ राजा

देने छेलै मलिनियाँ के

अग्नि कुण्डमे दादा

देने छलै मलिनियाँ के

आब भगति आइ करैलय

आब भगति आइ करैलय

मलिनिया सब

अग्नि त’ कुण्डवामे

आ भगति करैछै मलिनियाँ सब

अग्नि त’ कुण्वामे नै हौ ।

से बड़-बड़ भगति मोरंगमे जे केलीयै

शनि रवि पवनी वरत टेकलियै

एकादशी हरि बातो केलियै

नीक जल तुलसी द्वारलियै

नीक जल तुलसी द्वारलियै

शनि रवि अठवारे केलियै

आठो महीना गंगा नहेलियै

गंगामे एकटंगा देलीयै

पूरुब राज पूरनियाँ गेलीयै

जड़ि माटि कोशियामे देलीयै

कोशिया माय के साखी रखाँलियै

हाथी चढ़ि क’ गौड़ पूजलियै

दीनानाथ के सुमिरन केलियै

खोंपा छतौना मोरंगीया बन्हलियै

भरि पोंछ-कोंचा कोचामे भारली

मखमल चोलीया गात’ लगौलीयै

जेना-जेना मन हेतै

तेना-तेना करबै

सवामी अऔतै पलंग पर बैसीतै

ओह सभ सारि स्वामी संग खेलवै

आब मन के ममोलवा गै बहिना

मोरंगमे बीता लेवै

आ मन के मनोलवा बहिना

आ मोरंगमे विता लेवै गय ।

गै राम जोड़ी बहिना

तइयो ने बेइमनमा दुसधवा गै

दरशनमा देलकै

तइयो नै बेइमनमा

दरशन त’ देलकै गै

हिनपति मालि के बेटी अपन करुणा वरनन सुबै छलै । बेइमना छने रहै छै बेलकागढमे । छने रहै सखुआ बनमे । छने रहै छै मानिकदहमे । छने रहै दहबी घाटमे । कतै दरशन नइ दै छै । बेइमनमा ।

माता दुर्गाके अर्जी केलकै । हे माता ! जइ पुरुष पर बारह बरस के वयस बीता देलीयै । अल्फा वयस तरुणीया बीतगेलै । माथ केश तिलकि गेलै । से स्वामी हमरा दरशन नइ देलकै ।

से कत दरशन नरूपिया मैया गै

हमरा त’ दइतै

कत दरशनमा मैया जी

स्वामी हमरा द’ दैतै रामजोड़ी गै बहिना

चल-चल गै बहिना

स्वामी के त’ खोजैलय

सती मलीनियाँ जतरा करै छथिन उत्तराखण्ड के । श्री सतबरता के खोजमे स्वामी जत हमरा भेटि जेतै । सुग्गा पिंजड़ा नेने जाइ छी । सुग्गा बनाक’ पिंजडामे ध’ लेबै आ मोरंगमे चलि एवै । तखन राज मोरंगमे हम भोगबै ।

से उत्तराखंड के जतरा केलकै

सात दिन के रस्ता लगै छै

धौलागिरी के रस्ता धेरकै

तीन दिन तीन राति जे बीतलै

चारिम दिन धौलागिरी जे गेलै

धौलागिरीमे डेरा खसौलकै

तीन दिन तीन राति रहलकै

खाड़-खाड़मे देवता खोजै छै

पात-पातमे स्वामी खोजै छै

कतौ उदेश स्वामी के नै भेटै

पँचमा दिनमे डेरा तोड़ै छै

उदयचाड़ घिर तिला गेलै

उदय चौर पर डेरा गिरौलकौ

सात खोला त’ आगू बढ़तौ

तिलयुगामे डेरा गिरौलकै

हाथी के बाजार देखलकै

समतोला के ढेरी देखलकै

ओहिठाम स्वामी मलीनिया तकै छै

कतै उदेश स्वामी के नइ भेटलै

पछिम राज के हौ जतरा केलकै

तीरबे तीन तीरपेखन केलकै

तइयो स्वामी के उदेश नइ पेलकै

लाल हाट सग पगिया गेलै

ऊलीसिंह के हाटो लगै छै

चल चल बहिना लाल हाटमे

स्वामी मिलतै जादू मारवै

रने-बने रटैय । बान्हल मरवा अंगने छोड़ि देलकै । जाति

बेटा पर थूक फेकि देलकै । पल उठाके नइ तकलकैय ।

रने-बने त’ रटै छै मलीनिया

श्री त’ सतबरता के

रने बने दरशनमा के नइ होइ छै

सती मलीनियाँ के ने हय ।



हे रामजोड़ी बहीना

मलिनियाँ सब अपन लीला सुनबैय ।

आ गै बड़-बड़ भगति हम केलीयै

श्री त’ मोरंगमे

बड़-बड़ भगति हम केलीयै

श्री त’ मोरंगमे ने गय

गय चनन काटिक पौआ बनौलियै

सड़ड़ काटि के पासि देलीयै

काँचे धागासँ पलंगीया घोरौलियै

फुले ओछौना, फूले बिछौना

फुले के सिरहौना दैलीया

चानन काटि के पौआ बनौलियौ

गुआ चानन अंगना बड़ छिंटलौ

मेदनीफूल हम गाँजा लटौलियै

सोना चिलमबा रुपा ठेकरिया

अँचरा फाड़ि हम पलीता बनौलियै

मँह-महँ मँह-मँह मँह-मँह करै पलगिया

सोना थाड़ सिरमामे देलीयै

रुपा थाड़ गोरथारीमे देलीयै

पान खाइत पनबट्टा जोगौलियै

बंगला पान स्वामी ले देलीयै

तइयो ने निर्दइया दरशन देलकै

जादू मारि हम सुग्गा बनेबै

ल’ पिंजड़ा हम मोरंग जेबै

आब युग-युग हम राज गै बहिना

मोरंगमे हम भोगबै

युग-युग राज हम बहिना

मोरंगमे भोगबै ने गय ।

सती-मलीनियाँ राज-राज घुमै छथिन । कतै दर्शन नइ दैछै । सरकार मलीनियाँ सब आइ महुरा वनमे अशोथकित भऽ गेलैय ।....

साभार:— सलहेस गाथा, संपादक— महेन्द्र राम, फूलो पासवान, साहित्य अकादमी, २००७ ई.

## सिंहासनपर.....

— कहबी आ कथनी कोनो बेजाय नैने छै ?...चालि स्वभाव ने छुटे, त’ टाड़ उठाक’ मुते !

— सेहे बूझहो! जखैन जानवर भ’ उ कात-कोराटमे मूतै है, तोरासन-सन नटुकवा साहित्यकारसब त’ अगवे आगि मूतिक’ भाषा-संस्कृतिके दुरि करै हइ, कि नै ?

— नै नै, हमसब साहित्यक सब विधामे भ्रुरभ्रार लिखै छी आ स्वीकृतियो हय ! तैं अट्ठी रोपिक’ दंगल करैछी । ई सम्मान, ई पुरस्कार हमरा । कि तोरा जकाँ, खिली नै पढली आ बीच्चेमे हुड़दड़ फेरली । ... हमर कहब मान’ आ ई खुरसी अपना नामे दानमे केकरो द’ दहक ।

— कहअ त’ ! हम ई खुरसी, टेंटमेस’ पाइ-कौड़ी लगाक’ बनवएने छी से लोके मोफतमे द’ दियौ ? पहिने तों ई कह’त’ जे कलम-घस्सी स’ लिखल कोनो रचना आइ तैक तों केकरो नामे कएने छहो । केहन बढियाँ रहितै जे ओहो रचनाकार त’ कहबितै ?

— जाबत घरि ई बात तों नै बूझबहो, मितवा, ताबत तो कथाकार भइए नै सकैछा ! अपने खुरसी बनवएलास’ सम्मान नै के नै भेटतो । ऐला रक्कटा-खरकटा लागले रहि जएतो ।

— त’ तों हमरा लोक जिका बड़ बूड़ि बुझैछा ? हौ हम बीबीसी छै !

— हँ त’ बीबीसीके फूलफौर्म होइते छै— बड़ बूड़ि छी ।

— नै-नै, तों अपन ऐ ढहलेलपनिस’ उबर’ ! तब तों बीबीसी लंडनके अर्थ बुझबहो ।

— हम बड़’ बूझै छिए । आ हमरासनके बूझमे कोन बात ? बात त’ एत सबफ छै । एकर लाजबला अर्थ त’ केउ कहि देतो !

... बड़ बुड़ि लन्हन छी ।

— तब तों कापड़ि सर स’ समपर्केमे नै छा ! ओ हमरा खूब नीकस’ चिन्है छथि ।

काठक लोक नाटकक कठरीबाबाके ठठरीसन आकृति बनाक’ बातके आओरो पधरवैत कहलकैन— सुआइत तों बड़ बूड़ी छा ! आइ हो मितवा, तोरा कतौ केउ नै भेटलो जे तों कापड़ि संरके भथाएल खत्तामे खसि पड़ला ।

— नै नै, तों हुनका नै चिन्हलहोग’ । हौ तों जे अपन मुर्दा नाटकके देबहो, त ओकरो ओ जिआ देतो !

— नै हमरा होइत छल जे तों त’ एहन अवण्डकर्थी नै छला । हमरा भसलव मारैछल जे तों कोनो केकरो फसान-फेरीमे छा ।

— नैहो, हौ उहे हमर प्रचण्ड प्रतापी प्रतिभाके चिन्हैछथि । धनके हुनक पत्रिका— *धू’ आ, धअ जा!* ओइमे हमर रचनास’ पहिने हौ हमर ईतिहासे लिख देलखिन । हम ओकरा लेमिनेशन कराक’ रखने छी । आव जे कहाँदून ईतिहास लिखएतै, तैमे ओकरा सोभे अमाक’ पिया देब’के हइ । कापड़ि सरके माथाहाथ देल ओइ पन्नाके कोनो कालक बरखा-बिहाड़ि, धसना आ दाही नाश नै क’ सकै छै !

— आ धू, अपैत मितवा । धुत्त, तों सब नश कएला । तोरासन लोकके भसियाक’ पथभ्रष्ट ओ केलखुन ! आवो उबर’, आ सोफ डरिया पकर’ ! ओहूस’ पहिने बात पतिया करब’ आ अपना ओइ ठामस’ सबस’ पहिने ई अलगटेंटा अलगडाढ़ि खुरसी हटब’ ! तोरा ई छजै नै छो सेहे नै,आफत अनसोंहात लगैछो । हटएवे कर, हमरा ई देखि कर लगैछो ! सबस’ पहिने हमर समीक्षा सून’ ! ई नै भेलो । ई असलमे तोरा छजै नै छो । मितवा,ई जे खुरसी छो, से आव खुसीक’ उपला रहलछो !...तों एकर ट्रस्टी बनि जा’ आ मौलिक रचनाकारके अवधार क’, ओकरा पुरस्कारमे प्रदान क’ दा’ । अँटियाएल भँट्टा धानके भौँटिपिटक’ सोभे लछिमिनियाँ कोठी भ-भ भ-भ मे पियाब’के मनसूबा रहै— रमेशजीके । ओ चाहै जे बयबन्ही क’ध’क’ एकरा अपनालेल एहि दुआरे अपनियाँ ली, जे ऐपारके कथाकार त’ हमर पार पएवे नै करत आ ओइ पारके अंतिकीया अनन्ता कथाकारसबके सीमा पारक कनफेरी मारि, चारुनाल चित्तक, अपने ऐ उचका मचानी मंचीय खुरसीपर खुसी-खुसी थर्भाकि जाइ !

छोटखुटिया धूमौआ खुरसीस’ उठिक’ गओंस’ अवैत अछि— बिभक्तुमार आ चाणकीय मुस्कीमे चुस्कीलैत, कानमे कहैत छथि— अच्छा, तोरा त’ हम ई कायाकठके काठक समान देबो नै । तब तों ई कह, जे तों केकर पठाएल पेओनियाँ छा ? अनकालेल तों मड़वा, से तोहर संस्कार छौहे नै । भरोसी,धरमेनदर ला तों माड़ आवि सकै नै छा । से ए दुआरे जे उदुनु तोरा अरधै नै छो । मैलड़िया, विमल आ परेमशी प्रति उपकार तों क’ नै सकै छाअ ! सौंस श्यामके कियाम तों बूझै नै छहो !... तब ? कलबल एकरा अगब अमन्च, ओहू मे देहेलागल हमरे लग रह’ देब’मे तोरो भलमन्सी छो ।

नै मिलने बबाजीसनके रबड़ल पेरिया,रमेशजी रमण कएलनि ।

**The Best Hotel of Janakpur**

आरामदायी आवासका लागि,  
सर्वोत्तम भोजन, नास्ताको लागि,  
स्वच्छ र शान्तिपूर्ण व्यवस्था लागी,

**होटल सीता पैलेस**

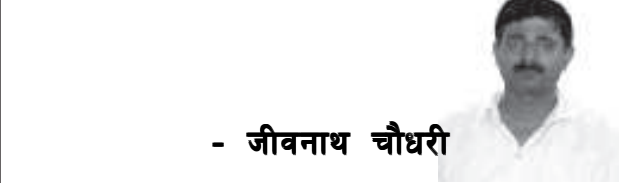
रामानन्द चौक जनकपुरधाम  
फोन नं.-०८१ ५९७६९६, ०८१ ५९७६९७



विचार प्रवाह

धान कुटू धनिया ... !

विद्यापति पुरस्कारस’ मैथिलीए पुरस्कृत अछि



- जीवनाथ चौधरी

मोटगर रकमके नेपाल विद्यापति पुरस्कार, सरकारी पुरस्कार रहने एकर महत्व आ आकर्षण स्वभाविके बहुत अछि । पुरस्कारक घोषणापर बहुतोके फरक मत आ अलग टिप्पणीसब भ’ सकैछ । मुदा हमरा जनिते एहिस’ चयन समिति पुरस्कृत व्यक्तिके छनौटमे बहुत मेहनति कएने अछि ।

नेपालक जाहि राजनैतिक समय-सन्दर्भ आ परिवेशमे पुरस्कार कोषके घोषणा कएल गेल अछि, हमरा जनिते एहिस’ स्वयं मैथिली भाषा-संस्कृतिक पहचान आ विशेषता सरकारद्वारा पुरस्कृत भेल अछि । नेपालक भाषा-संस्कृतिक चकचालिस’ मैथिलीके बहुत नाश भेल अछि । राष्ट्रिय जनगणना आ संघीय संरचनामे मिथिलाराजक संवैधानिक सुनिश्चितता प्रदान करएबाक आन्दोलन एहि क्रममे, मिथिला-मैथिली विरोधीके ई पुरपस्कारक व्यवस्था नहि पचि रहल छै । एहनमे विद्यापति पुरस्कार प्रति एतुका सब पक्षके सकारात्मक भ’ मैथिलीके रचनाधर्मिताके गतिशील आ व्यापक बनएबाक अभियानमे ई ऊर्जा आ प्रोत्साहनक काज करए, से प्रयास रहए ।

संघर्ष मिथिला

- देवेश्वरलाल मुन्ना

गीत गबैछी जय-जय मिथिला  
कविता लिखी पाँजक पाँज ।  
मनक मध्य मधेशी साजे,  
वैनर साजे मिथिला राज ॥  
साजे मिथिला राज,  
मधेशी ऐइयाशीमे डूबल ।  
मैथिल करय किलोल,  
मिथिला फजगजमे छूटल ॥  
बाबू-भैया हम-तसम बाजथि,  
वैनर टाड़थि मिथिला राज ।  
बाजय बेरिमे चुप्पी सधने,  
मनभौका बौका बूड़िराज ॥

००

सहस्र सदीस’ हमर भाषा,  
हमर संस्कृति, हमर भेष ।  
हमर समाज, राज्य पुनि हमर,  
बूड़लसब बाँकी अछि शेष ॥  
बाँकी अछि शेष,  
अपन नेपालक किथिला ।  
दुदिशिया करए नेतृत्व,  
आन्दोलन शिथिला अति शिथिला ॥  
मिथिला राज्य संघर्ष समितिक,  
बान्हल मोटरी फोलू ।  
जे-जे कयलन्हि कवि रंगकर्मी  
नेताजी से बोलू ॥

००

वृषेशचन्द्र लालक तीनटा कविता

cfx !

चाही सन्तान  
सुन्दर भविष्य  
प्रगति आ विकास  
मान आ पहचान  
मुदा दर्दनहि होए  
कतहु किछु कनेको  
नोचाए नहि दुखाए नहि  
लडए भिडए नहि पडए  
केओ पडोसमे उठए  
लडए भिरए मरए  
आ सुतलो रही तँ  
उठाकर हाथमे स्नेहसँ थमा देए ’  
आह !!

v"gtFv"gs  
खून तँ खून छैक  
छुरा भोंक कए  
वा अनेरे भोंक कए  
अथाह अनजान पानिमे  
फूसला कए गोंति कए  
वा घोखासँ घेट घोंटि कए  
खून तँ खून छैक !  
खून कए खूनीयाँ  
कतहु भागि जाइत अछि  
कतहु क्रुर मुस्कीसँ नहा जाइत अछि  
केओ लाश देखि डराइत अछि  
केओ लाशेपर मडराइत अछि  
आ अन्तमे लाक अडक-प्रत्यङ्ग  
भ्नुनभ्नुना बना कए बेचि लैत अछि ।  
अपन क्रुर करतूतकेँ  
लगहरि पन्हाएल थून्ह बना लैत अछि  
मूदा खून तँ खून छैक !!

ओना खून तँ यमदूते करैत छैक  
यमलोकसँ अज्ञेय अदृश्य  
आएल रस्से धरैत छैक ।  
एहि लोकक लोक त नहि देखैत अछि  
मुदा जे कसाइत अछि  
सत्ते देखैत हएतैक  
न्याय आ अन्यायक लेखालेल  
ओतए फरियाद फेकैत हएतैक  
आ खूनीयाँक खातामे  
ओतए हिसाब जोडैत हएतैक ।  
एतए ओकर खातामे  
चून लागि जाइत हएतैक  
आखिर खून तँ खून छैक !!!

s] sPrx O{ v"gt <  
के कएलह ई खून ?  
रे कायर, कनिजे एम्हर सून !  
घोखिया, छली, स्वार्थ आन्हर  
सभ दिन नुकाएले रहैत अछि  
मुंह जे भरभराएल आ कारी होइत छैक ।  
कायर विध्वन्सपर भलेहि  
क्षणभरि अपनाकेँ भारी सोचो  
मुदा तत्क्षण मनेमन  
दुर्जन अपनोकें दुराचारीये बुझैत अछि ।  
करेज जडैत रहैत छैक  
तिलमिलाकए मरैत रहैत अछि ।  
आ तँ तँ अपनाकेँ कारी लवादामे  
धुप्प अन्हारमे नुकाओल रहैत अछि ।  
अधर्मी चटतौक तोरा धुन !  
रे कायर, कनिजे एम्हर तौ सून !!

(मिथिला आन्दोलनमे भेल वम विस्फोट काण्डपर लिखल कविता)

सलहेसक .....

बूल’ आ आनन्द मनब’ अवैत जाइत छल । ई परिसर विशाल आ पुण्ड्रभावक रहल अछि । मानिक दह एहन देवस्थल छल जत’ परी अप्सरासब नचैत गबैत रहैत छल ।

देवतासब एहि दहमे जल विहार करैत जाइछला । पावस, मूलवा आ मिर्मिरी देल अलौकिक रहैत छल । एतए ऋषि मुनि आ तपसीसबहक बास आ पैवैश छल । तप, यज्ञ आ देवागमनस’ ई भूमि पुनित शक्तिपीठ एवं देवानन्दधाम बनल रहने आ ऋषिमुनिक आवागमन एवं पहुँच फुलबड़िया आ एहि क्षेत्रक तत्कालीन गाम-ठामक लोकमे रहने एकर बहुतो जनश्रुति आ मिथकसब बनि चुकल अछि । एकरे लग भिरक पतारि पोखरि छल, जतए

देवधरमक काज, पुण्य प्राप्ति आ पतिया प्रायश्चितक उपरान्त जतिया प्रत्यावर्तन कएल जाइत छल । कर्मदोष आ आनोआन कारणे बाते पुत्रहीनके सन्तानक वरदान द’ जन्म सुफल कएल जाइत छल ।

सलहेस कमलदहमे शान्ति आ आनन्दक उद्देश्यस’ जाइत छलाह । ओहन दिव्य अपूर्व कमल दहके एखनुक बन उपभोक्ता समितिसब खन-जोतक’ नन्ह-भन्ड क’, एकर सबटा सौरव ऋंगार आ आस्था-स्थलके दुरि क’ देने अछि । एहन एतिहासिक पौराणिक दहके काटि-छाँटिक’ ओहिमे माछ पालन करब, ठिक ठनका लगाएब, सांस्कृतिक सम्पदाके नष्ट करवाक अपराध सरिखाक बात भेल ।

समाजिक ...

उदघोषण, संचालन आ प्राज्ञ रमेश रंजनक विशिष्ट आतिथ्यमे सुसम्पन्न संगोष्ठीमे नेपालस’ तारानन्द मिश्र, डा. रामदयाल राकेश, रमेश रंजन, नथुनी सिंह दनुवार तथा भारतस’ आएल डा. रमानन्द फा रमण, डा. बुचरु पासवान आदिक कार्यपत्र प्रस्तुत भेल छल । सम्पूर्ण कार्यमक रिपोर्टिग कएने छलाह श्याम शशि आ चन्द्रेश ।

मैथिली .....

तालिम प्रमुखक कुमारी अम्बिका शाहके अध्यक्षता आ परमेश्वर कापड़िक प्रमुख आतिथ्यमे सम्पन्न उद्घाटन कार्यक्रममे, तालिम प्रमुख, तालिक देनिहार प्रशिक्षक लोकनि प्राथमिक तहमे मातृभाषा शिक्षा आ मैथिली भाषा-संस्कृतिक

महत्वक संगहि शिक्षामे भ’ रहल नेपाली भाषाद्वारा शोषणके खुलिक’ विरोध करैत, शिक्षक लोकनि प्रतिबद्धता व्यक्त करैत गेलाह जे हमसब कहूँतो राजनीतिक आस्थाक लोक होइतहुँ, अपन मातृभाषा मैथिलीक माध्यमस’ प्राथमिक तहमे शिक्षा देवाक कार्यके मैथिली अभियानके रुपमे ल’ जाएब ।



नास्तिको वेद निन्दकः ॥

- कृष्ण शंकर मिश्र



मिथिलाक प्रांगण में वर्णाश्रमी वैदिक, शाक्त, शैव आ वैष्णव एहि तीनूक प्रधानता अनादि कालसँ देखवा में अवैत अछि । तिरहुत नरेश राजर्षिनिमि, मिथि, विदेह योगिराज याज्ञवल्क, महर्षि कपिल, तर्कशास्त्र प्रणेता महर्षि गौतम, न्याय अष्टा गंगेश उपाध्याय, बौद्धधर्म विजेता आचार्य उदयन, सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र मण्डन, वाचस्पति आदिक वाते की, समकालीन सन्त त्रय रोहिणी दत्त, रघुवर गोसांइ आ लक्ष्मी नाथ गोसांइ वैष्णव प्रसिद्ध वैष्णव भेल छथि मिथिलामे । एखनो हिनका लोकनिक पुत्र, पौत्र, दौहित्र आदि परम्परागत वैदिक वर्णाश्रम वैष्णव मर्यादाक संरक्षण में लागल छथि । एखनो सुप्रसिद्ध गोसांइ लोकनिक कुटी में भजन कीर्तन, तर्पण आ यथायोग्य पूजन-सत्कार भ रहल अछि ।

ओहि गोसांइ कुटी सब में कहिओ, कोनो अवसर में सप्त मुद्रांक अथवा पशु-याग वली आदिक विषय में चर्चा नहि होइत छल । कोनो तरहक विवाद उपस्थित होइते नहि छल । एकर सभसँ नीक परिणाम ई छल जे सब धर्म, सब सम्प्रदाय, आ सब वर्णाश्रमी “याज्ञवल्क” प्रतिपादित धर्मस्टा निर्णयः कार्यो मिथिला व्यवहारतः में समाहित रहैत छल । तें अपन-अपन नियम में सब गतिशिल छल आ उच्चता कें प्राप्त कैने छल । एहिं तरहें मिथिलाक अकाट्य सिद्धान्त सभटा वर्ण, धर्म आ सम्प्रदायक पवित्र संगम बनि गेल छल । सभकेओ मिथिलाक चौदह सय मिमांसक द्वारा निर्मित प्राचिन सदाचार के आदर आ अनुशरण करैत छल—“नास्मिन देशे य आचारः पारम्पर्य क्रमागतः । वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते ॥”

वर्तमान समय में किछु भिन्नता देखवा में आवि रहल अछि जे दुःखद मात्रे नहि अवैदिक सेहो छल । खुल्लम-खुल्ला प्राचिनक विशेषता के अस्वीकार कैल जा रहल अछि । प्राचिन सदाचारक सिद्धान्तक समालोचना अथवा ओकरा विरुद्धमें नवीन आचारक श्रृजन कैल जा रहल अछि । एहि विषय में एतवे कहब पर्याप्त हायत जे नवीन आचारक सृजन करब नवोदित धर्मशास्त्रो विद्वानक मात्र अदूरदर्शिता अछि ।

आई काल्हि नवोदित वैष्णव मण्डली, जगत जननी जानकीक जन्म भूमि पर घुमि-घुमिक ग्रामीण अपढ़ जनताके समक्ष वैदिक धर्मजात सर्वोच्च वैष्णव धर्म के विरुद्ध आर्येतर अभिनव अवैदिक धर्मक प्रचार क रहल छथि । यद्यपि एहने काल अज्ञानतावस कैल जा रहल अछि, तैयो दुःखद अवश्य अछि ।

केओ वलि-प्रदानक विरोध क रहल अछि त केओ प्राचिन सदाचार के अस्वीकार क रहल अछि । वास्तविकता त ई अछि जे ओ लोकनि हिंसा-अहिंसाके बात नहिं क रहल छथि, मात्र वलि प्रदानक विरोध में पोस्टर, बैनर, नारा-जुलुस क रहल छथि । आव त मिथिलाक विशिष्ट पद्धति, लोकाचार आ सदाचार पर आक्रमण क रहल छथि । संभवतः आव नव आचारीक आचरण मिथिला के नहिं पचि रहल छैक ।

बुझाइत अछि नवाचारी लोकनि कुप-मण्डक भ गेल छथि । ओ लोकनि—“देवान पितृश्रार्ययित्वा खेदन मांसं न दुष्यति” के अस्वीकार क अपना के अवैदित प्रमाणित क रहल छथि । यज्ञार्थे पशवः सृष्टा यज्ञार्थे प्रगुघाततम-इत्यादि स्मृति प्रतिवादित के नहिं मानैत छथि । तखन बड़ विशाल प्रश्न उठैत अछि ई लोकनि छथि के ? हिनक पहचान की ? ई आर्येत्तर धर्म के माननिहार कतौ नास्तिकत नहिं छथि । – नास्तिको वेद निन्दकः ॥

जय माँ  
वैभव लक्ष्मी